06-06-97

हदों को समाप्त कर सर्वंश त्यागी और बेहद के वैरागी बनो

आज बाबा के पास जाना हुआ तो जाते ही बापदादा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और उसी ही मीठी मुस्कराहट से मिलन मनाया। जैसे ही मैं आगे बढ़ती गई तो बाबा के बहुत मीठे बोल सुनती गई। बाबा ने कहा – ''**आओ मेरे स्वराज्य-अधिकारी राज़े बच्चे आओ**'', तो मैं भी मुस्करा रही थी, ऐसे ही नयनों की मुलाकात होते फिर बाबा ने पूछा कि आपके स्वराज्य दरबार का क्या समाचार है? तो मैं मुस्कराती रही। फिर बाबा ने कहा – बोलो बच्ची,

आप क्या समाचार लाई हो? तो मैंने कहा – बाबा आप तो जानते ही हैं। बाबा ने कहा – नहीं, सुनाओ। मैंने कहा बाबा सभी के मन में बहुत उमंग है कि बस जो बाबा चाहता है वह हम अभी करके ही दिखायें। तो बाबा एक सेकण्ड के लिए जैसे अन्दर ही अन्दर कुछ सोच रहा था लेकिन जैसे सोचते हुए कोई बहुत मीठा मुस्कराता है, ऐसे लग रहा था। फिर बाबा ने कहा कि बच्चों का जब संकल्प श्रेष्ठ है फिर स्वरूप और संकल्प में अन्तर क्यों? चाहना और करना, चाहना के रूप में तो बहुत अच्छा है और करना, उसमें अन्तर पड़ जाता है। तो बाबा ने कहा बच्ची, इसका कारण समझती हो कि इतना अन्तर क्यों है? बाबा ने बताया इसकी दो ही बातें हैं। **एक बात – बच्चे त्यागी तो बने हैं लेकिन सर्वन्श त्यागी, यह बनना है और दूसरा – बेहद के वैरागी।** यह दो बातें अगर बच्चों की समान हो जाएं, इन्हीं दो बातों पर अटेन्शन दें तो यह सहज हो सकता है। ऐसे बोलते हुए बाबा जैसे एक सेकण्ड के लिए एकदम वहाँ नहीं थे। मैं बाबा के नयनों में देखती रही। फिर बाबा ने कहा बच्ची मैं स्वराज्य दरबार का चक्र लगाकर आया हूँ। मैंने कहा बाबा आपने क्या देखा? तो बाबा मुस्कराये और कहा कि एक बात बाबा को बहुत बार आती है लेकिन ..... ऐसे कहकर बाबा चुप हो गया। मैंने कहा बाबा लेकिन क्या? कहा, सेवा में बच्चे बाबा की दिल पूरी कर रहे हैं। जो सोचते हैं वह समय अनुसार करके भी दिखाते हैं लेकिन बाबा की एक आशा अभी तक बच्चों ने पूरी नहीं की है। वह कौन-सी आशा?

बाबा ने कहा – बाबा हमेशा निमित्त बने हुए बच्चों को कहते हैं कि ऐसा कोई ग्रुप बनाओ जो यह एक पान का बीड़ा उठाये – जैसे सेवा के प्रोग्राम करने होते हैं तो बीड़ा उठाते हैं ना। तो बाबा को अब ऐसा ग्रुप चाहिए **जो बाबा कहता व चाहता है, उसी प्रमाण उनकी वृत्ति, दृष्टि, मन्सा, वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क हो।** उसके लिए दो बातें जो बाबा ने कही, एक तो जो भी बुराईयां हैं – वह वंश सहित त्याग हो जाएँ और दूसरा – बेहद के वैरागी हो जाएँ।

तो बाबा अब ऐसा ग्रुप चाहते हैं **जो अपने को हद में नहीं समझें। मैं यहाँ की**

हूँ, यहाँ का हूँ, नहीं। सब मेरे हैं और मैं सबकी हूँ। जैसे बड़ी दादियां हैं। तो यह अपने को एक स्थान की नहीं समझती, सारे वर्ल्ड की जिम्मेवारी समझती हैं। ऐसे नहीं मधुबन में रहते मधुबन के हैं नहीं, मधुबन में रहते भी सारे वर्ल्ड की हैं। तो जैसे दादियों से भासना आती है कि यह सबके हैं। तो ऐसा ग्रुप बाबा को चाहिए। बाबा ने कहा – यह जो बाबा की आशा है – बस, हम सबके हैं। बेहद के वैरागी भी हैं और बेहद के हैं, बेहद हमारा है। अब यही आश बच्चों को पूरी करनी है।

तो बाबा ने कहा – बच्ची, बाबा से प्यार तो सभी का है। प्यार की जब बात निकलती है तो बापदादा भी बच्चों का प्यार देखकर जैसे पानी हो जाता है। आंखों में जैसे आंसू भर आते हैं कि इन बच्चों का प्यार बहुत है। लेकिन प्यार का रिटर्न नहीं दिया है। और रिटर्न क्या है? अपने को टर्न करना। जो बाबा चाहते हैं उसी प्रमाण अपनी अवस्था को रखना, यही बाबा को प्यार का रिटर्न करना है। तो बाबा ने कहा सभी बच्चों को कहना कि अब दृढ़ संकल्प करें। बातें तो कई आयेंगी लेकिन उन सब बातों को तय (पार) करके मुझे बाबा को रिटर्न देना है, अपने को टर्न करना है। सर्वंश त्यागी और बेहद के वैरागी स्थिति में रहना है। ऐसा दृढ़ संकल्प अगर बच्चे इस बारी हिम्मत से करें तो बाबा उन बच्चों को दिल से तो मुबारक देंगे ही लेकिन सभी के सामने बाबा उन्हों से विशेष मिलन मनायेंगे। जब इस बारी बाबा आयेंगे तो उस ग्रुप से विशेष मिलन मनायेंगे और बहुत दिल का प्यार वा रिटर्न देने वाले बच्चों को बाबा भी रिटर्न देंगे – जीते रहो बच्चे, सदा उड़ते रहो बच्चे।

उसके बाद बाबा ने और भी समाचार पूछे। तो हमने ज्ञान सरोवर की सेवाओं का सुनाया। बाबा ने कहा इसमें तो बाबा खुश है कि हर एक बच्चे को बाप का नाम बाला करने का उमंग है और आगे भी बढ़ता रहेगा। इस ज्ञान सरोवर को वरदान है और वरदान होने के कारण वह आत्माओं को आकर्षित करता है। बच्चों को मेहनत कम करनी पड़ती है। समय प्रति समय जैसे आगे बढ़ते जाते हैं, तो पहले मेहनत से आते थे अभी मुहब्बत से

अपनी इच्छा से आते हैं कि हम जायें। यह वरदान जो भूमि को मिला हुआ है, इसकी आकर्षण है और बच्चों की हिम्मत है। लेकिन अभी बाबा की जो आशा है इसमें बाबा देखेंगे कि कौन पान का बीड़ा उठाते हैं। भल कुछ भी हो, क्या भी करना पड़े, छोड़ना पड़े, त्याग करना पड़े लेकिन बाबा की आश पूरी करके ही दिखायेंगे। ऐसे दृढ़ संकल्प वाला ग्रुप बाबा देखने चाहते हैं।

फिर सभी को बाबा ने याद दी। दोनों दादियों को भी याद दी और कहा कि अभी दादियों को भी काम देता हूँ कि ऐसा ग्रुप बाबा को इस सीजन में सौगात देवें। जैसे वर्गीकरण की रिजल्ट बहुत अच्छी है, वैसे यह सौगात बाबा को देने का कार्य निमित्त दादियों को और सभी को बाबा दे रहा है।

फिर बाबा को विदेश तथा देश के सभी बच्चों की याद दी तो बाबा ने कहा, वह तो बाबा चारों ओर के बच्चों की सेवा देखकर खुश है, सभी में उमंग-उत्साह भी है। पुरूषार्थ भी कर रहे हैं। लेकिन आप जो निमित्त हैं उन्हों के वायब्रेशन से उन्हों में और हिम्मत आयेगी और आगे बढ़ते जायेंगे। ऐसे सबके प्रति याद-प्यार लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।